खुरपका मुँहपका रोग (एफ.एम.डी.)

राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनएडीसीपी)

राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनएडीसीपी) माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 11 सितंबर, 2019 में खुरपका मुँहपका रोग (फुट एंड माउथ डिजीज-FMD) और ब्रूसीलोसिस (Brucellosis) के नियंत्रण के लिए 13,343.00 करोड़ रु. के परिव्यय के साथ पाँच वर्षों (2019-20 से 2023-24 तक) के लिए शुरू किया गया। यह एक भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत खुरपका मुँहपका रोग के लिए गोपशु, भैंस, भेड़, बकरी और सुअर एवं ब्रूसीलोसिस के लिए गोजातीय प्रजाति की मादा बछियों (जिसकी आयु 4-8 महीनें) की हो का सौ प्रतिशत टीकाकरण किया जाना है।

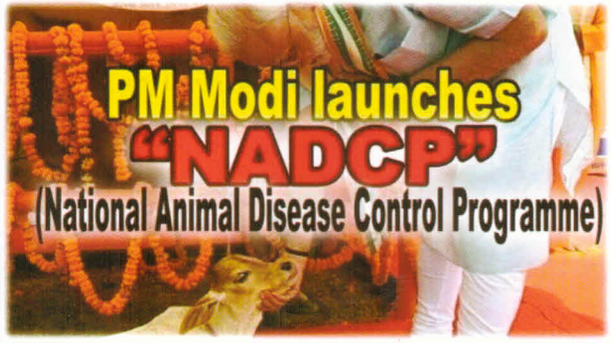

पृष्ठभूमि

पशुपालन एवं डेयरी विभाग के पशु जनगणना 2019 के सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की पशुधन संपदा लगभग 512 मिलियन है, जिसमें गोवंश, भैंस, बकरियाँ, भेड़, सुअर की जनसंख्या लगभग 190, 110, 134, 65, 10 मिलियन क्रमश: हैं। दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से, भारत 176.35 मिलियन मीट्रिक टन के उत्पादन के साथ विश्व स्तर पर दूध का सबसे बड़ा उत्पादक देश है किन्तु यह उत्पाद मात्रा सम्पूर्ण पशुधन सम्पदा के परिवेश में बहुत अच्छी नहीं माना जाता है। साथ ही साथ यह भी देखा गया है कि पशुधन क्षेत्र के पूर्ण विकास मे पशु रोगों की व्यापकता मुख्य अवरोधक है। इनमें से कुछ मुख्य बीमारियाँ जैसे कि खुरपका मुँहपका रोग, ब्रूसीलोसिस, पी.पी.आर. आदि है जिससे कि बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान होता हैं एवं देश कि अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

खुरपका मुँहपका रोग की वजह से न केवल दुग्ध-उत्पादन में कमी होती है बल्कि पशुधन उत्पाद में कमी, बैलों कि प्रजनन क्षमता और कार्य क्षमता में कमी आती है एवं देश से पशु उत्पादों के निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि खुरपका मुँहपका रोग मुक्त विकसित देश व्यापार पर प्रतिबंध लगा देते है। खुरपका मुँहपका रोग खुर वाले पशु जैसे कि गोवंश, भैंस, भेड़, बकरी और सुअर आदि का एक अत्यधिक संक्रामक विषाणु जनित रोग है। इस रोग में संक्रमित पशु को तेज बुखार (104-106°C), भूँख न लगना, सुस्ती छाना, अत्यधिक लार टपकना, मुँह में विशेष रूप से मसूड़ों और जीभ पर पुटिकाओं का होना, खुरों के बीच की जगह में घाव व थनों पर छाले आदि हो सकते हैं।

आर्थिक प्रभाव की दृष्टि से पूरे विश्व में यह एक गंभीर बीमारी है जिसके कारण इस बीमारी का नियंत्रण और उन्मूलन के लिए विश्व स्तर पर इसे प्राथमिकता प्राप्त है। इस रोग से होने वाले आर्थिक नुकसान बहुत अधिक होते हैं जो कि पशु के जीवन चक्र के दौरान जारी रहते हैं।

खुरपका मुँहपका रोग के कारण देश में प्रति वर्ष लगभग 20,000 करोड़ रुपयों का प्रत्यक्ष नुकसान होता है। इसलिए देश में इस बीमारी का नियंत्रण और उन्मूलन जरूरी है। इस बीमारी का नियंत्रण सिर्फ टीकाकरण द्वारा ही संभव है। यह न केवल जानवरों को स्वस्थ व पशु-पालकों को समृद्ध बनाएगा बल्कि दुनिया भर में हमारे पशु उत्पादों की बेहतर उत्पादकता और स्वीकार्यता को भी सार्थक करेगा।

खुरपका मुँहपका रोग का संक्रमण संक्रमित जानवरों के संपर्क में आने से होता है। इसका संक्रमण दूषित चारा, पानी, मनुष्य, संक्रमित पशु की आवा-जाही के माध्यम से फैलता है। विषाणु जनित होने के कारण इसका तत्काल कोई इलाज नहीं होता है। संक्रमित पशु को स्वस्थ-पशु से अलग कर रोग के लक्षणों के अनुसार उपचार दिया जाना चाहिए और पशु बाड़े को उपयुक्त निस्संक्रामक से साफ किया जाना चाहिए। दूध पीने वाले बछड़ों को मुलायम खाद्य देने चाहिए। जब तक रोग की तीव्रता कम नहीं हो जाती तब तक नियमित अंतराल पर बार-बार संवेदनशील पशुओं के सामूहिक टीकाकरण द्वारा एफएमडी पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार, देश से धीरे-धीरे इस बीमारी के नियंत्रण और उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त होगा।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- खुरपका मुँहपका रोग और ब्रुसीलोसिस के लिए राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण (एनएडीसीपी) कार्यक्रम का समग्र उदेश्य टीकाकरण के द्वारा 2025 तक खुरपका मुँहपका रोग का नियंत्रण और 2030 तक इसका उन्मूलन करना है। इसके परिणाम स्वरूप घरेलू उत्पादन में वृद्धि होगी अंतत: दूध और पशुधन उत्पादों के निर्यात में वृद्धि होगी।
- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम केंद्र सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है जिसके अंतर्गत खुरपका मुँहपका रोग और ब्रूसीलोसिस रोग नियंत्रण व उन्मूलन हेतु राज्यों/केंद्रीय क्षेत्रों को भारत सरकार द्वारा सौ प्रतिशत धनराशी प्रदान की जाएगी।

एनएडीसीपी कार्यक्रम के अंतर्गत खुरपका मुँहपका रोग और ब्रूसीलोसिस रोग नियंत्रण व उन्मूलन योजना की प्रमुख गतिविधियाँ:-

- खुरपका मुँहपका रोग के विरुद्ध व्यापक टीकाकरण: जुगाली करने वाले पशु जैसे कि गाय, भैंस, भेंड, बकरी, सूअर, आदि का छमाही अन्तराल पर खुरपका मुँहपका का टीकाकरण।
- टीकाकरण से एक महीना पहले कृमिनाशक का प्रयोग।
- राष्ट्रीय, राज्य, ब्लॉक व गाँव स्तर पर प्रचार एवं जन-जागरूकता अभियान जिसमें कि राज्य-स्तर पर इस अभियान को सफल बनाने की स्पष्ट कार्यप्रणाली सुनिश्चित हो।
- 4-5 माह की आयु के गोजातीय बछड़ों का प्राथमिक टीकाकरण।
- कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए राज्य पदाधिकारियों के उन्मुखीकरण सहित राष्ट्रीय, राज्य, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर प्रचार और जन-जागरूकता अभियान।
- ईयर टैगिंग, पंजीकरण और डेटा अपलोड करके लक्षित पशुओं की पहचान करना और पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिए सूचना नेटवर्क के पशु स्वास्थ्य मॉड्यूल (आईएनएपीएच) में डेटा अपलोड करना।
- पशु स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से टीकाकरण का अभिलेख रखना।
- पशुओं की आबादी की सीरो-मोनिट्रिंग व सीरो-सर्विलेंस करना।
- रोग-प्रकोप के मामले में जाँच और वायरस आइसोलेशन और टाइपिंग करना।
- विभिन्न पैमानों/मापदंडो द्वारा पशु-आवागमन पर निगरानी व नियंत्रण रखना।
- टीकाकरण से पूर्व व बाद के सीरम नमूनों में एंटीबाडी का प्रयोगशाला में परीक्षण।
- कार्यक्रम के प्रभाव के मूल्यांकन, सही डेटा का सृजन और नियमित निगरानी करना।
- ऐसे सक्ष्म लोगों को तैयार करना जो कि टीका लगाने, ईयरटैगिंग, पंजीकरण और डेटा अपलोड इत्यादि कार्यों में निपुण हो।

सभी अतिसंवेदनशील पशुओं के नियमित अंतराल पर सामूहिक टीकाकरण द्वारा खुरपका मुँहपका रोग पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। इस परियोजना का उद्देश्य खुर वाले पालतू जानवरों जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी और सुअर का सौ प्रतिशत टीकाकरण करना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत, गाय एवं भैंस के बछड़ों का प्राथमिक टीकाकरण 4-5 माह की आयु किया जाएगा इसके बाद छह-मासिक अंतराल पर टीकाकरण होगी। प्रत्येक सामूहिक टीकाकरण की अवधि अधिकतम तीस दिन की होगी। पूरे देश में एक ही समय-सीमा में टीकाकरण करना प्रस्तावित होगा, किन्तु जब तक पूरे देश में एक-समान टीकाकरण प्राप्त नहीं हो जाता तब तक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश प्रत्येक वित्तीय वर्ष की शुरुआत में अपने व्यक्तिगत टीकाकरण कार्यक्रम प्रदान कर सकते हैं। भारत सरकार टीकाकरण करने के लिए वैक्सीन और अन्य संदर्भित सामान की खरीद के लिए सभी लागतों को वहन करेगी।

द्वारा तैयार

डा एस.एस. दहिया, डा आर. रंजन, डा एन.आर. साहू, डा एम. राउत, डा जे.के. महापात्र, डा जे.के. बिस्वाल, डा एस.आर. मलिक, डा एम. साहू , डा एस. दास, डा टी. दास एवं डा आर.पी. सिंह

संपर्क करें

अंतर्राष्ट्रीय खुरपका मुँहपका रोग केन्द्र

अरुगुल, भुवनेश्वर-752050 (ओड़िशा)

दूरभाष: 0674--2601104/105

ईमेल: sic.icfmd@gmail.com, director.dfmd@gmail.com

द्वारा प्रकाशित

भाकृअनुप-राष्ट्रीय खुरपका मुहपका रोग संस्थान

ICAR-National Institute on Food and Mouth Disease

(FAO Reference Centre for FMD)

अंतर्राष्ट्रीय खुरपका मुँहपका रोग केन्द्र

International Centre for Foot and Mouth Disease

अट/पोस्ट-अरुगुल, जटनी, जिला-खोरधा, ओड़िशा-752050

At/Po & Arugul, Jatani, Dist: Khordha, Odisha-752050

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch